

Sh
55

✓ पी० सं० ५१६६ (33) १२३
ला० १

✓ वर्ष पाल विचार (गुरुमुखी लिपि)

१३- अक्षर
अक्षर

विचयगेहिदभृता ॥ ११ ॥ ॐ ति ॥ ॥ **सुषुतभृतरदिभु**
भृदभृ ॥ ॐ भृष्टिरेवमलेमनपीनघातिकविउ
 उरभपिकउ ॥ मिउयाडिउगंउरुसुदयरेदिरपडे
 उरभंभृ ॥ ० ॥ ॐ पवैररिकरपुनरेम ॥ ॐ यिउठवडिनीडि
 रगीव ॥ भृष्टुडभकलः किलरिहंवडरेदिरकउपभं
 भृ ॥ १ ॥ ॐ रभरकनकमभरहृहभुतामपपिपधिरगी
 व ॥ कदभणभउतंठउभरउलठवगउसुग ॥ ३ ॥ ॐ
 भिभलकूलठीडिः सभुद्वैरिठवभपयाडिभहृष्टिः
 वदरपययडंयविउतंहुउलेकभलकनरकउ ॥ २

पुरभिः परिवारकलत्रेयपीरुनविदीनभापः भृश
 आनवेभतिरुनेः परिदीनः ॥ पद्मकननभउदिभउम्मे
 ५ ॥ वैठवंदिलठउकिउपालाङ्गाभिरीविभलकी
 लिविलाभमा ॥ मइवजविंयंयनकछिः चैरभदिर
 गउः भविमये ॥ ६ ॥ वभिलेयनमिरः परिपीमंयान
 भागभनभइविमिदुभा ॥ दावउदिनपडोभदनम्मेकमि
 नींउभनः परिउधुभा ॥ ७ ॥ मिउभमवमरीरविकरै
 उइरुक्कैरुमिठवैरपिरुल्ली ॥ कुमिपालगविलह
 रइउवुलउपिठयभभुभगउ ॥ ८ ॥ पद्मकननविर

अठ
 न.
 उ

CC-0 Sharada Manuscripts at UPSS Lucknow, Digitized by eGangotri

०३ ॥ **सुषमम्भु** ॥ ॥ शुभापिवापुर्वरुणरुणं
 उषाविकारंयगनवेधु ॥ **दृष्टागमंमाल्युभंरुमधं**
 देगभिज्ञाः मीउकरः करेति ॥ ० ॥ **भ** एनमोपवमंवि
 उमंभरिभुतिदिनेभितवभुभभागभभा ॥ **परगउःऊ**
 रुउपउभाद्वयंदिभकरेनलेकेनकरेतिविप्रयभा ॥
 ७ ॥ **दृष्टाठ** विविपेद्ववप्रलंगचिडादिपरिदरिवि
 रुदभा ॥ **पदकृद्वलिरिभ्रदराभुः** मंप्रयसुतिननं
 दरिप्रकः ॥ ३ ॥ **उरगयवतिभोष्टंमदिष्टादिउव**
 वि ॥ **एनपनलाठंकेरुवेतिम** ॥ **एनयतिभरि**

पठ
 तं
 र

एतन्त्रयभाजद्वयपरममङ्गलकिरु॥भालीकुलभुवनम
 ली॥२॥दुभिपालकुलउविपलाहंकिं कभिरीविल।
 भिद्विरिगुगुभा॥वद्विगोरवलायेद्ववद्विभंभुयद्व।
 रिभउद्विभरमिः॥२॥द्वेधुनाउलाविगुभधिरुगंर
 नुवैद्वविद्वणद्विविवाहभा॥उभुद्वसुचपउद्वद्वभीहं
 वेरवेमद्विरिमपडिरेधः॥२॥रलभउलनगोरवपु
 कुं विरययकलरगामोद्वभा॥द्वद्वलद्वभलद्वभरि
 लकुंभीमिद्वरिद्ववद्वभममैरभुः॥२॥रुद्वैरुधि।
 द्वयेद्वद्वपवभलरुद्वभमवद्विद्वभेव॥गारकद्वेनै

मङ्गलार्चनार्थं प्रोक्तं भवति ॥ ३ ॥ अस्य च
 भवति विवर्तनं न तत्र गमागमनादिक भासि मे श्री ॥ कुभ
 मकननलीव न दन मेन व भय भमभ भि उतांग उ
 ७ ॥ लाठेठने म्भिपतेः भक मकुलर भुद विउ भि र भो
 पृभा विपक पक काय सव व द्वा स वे दि भं सु द मभा
 मिउ प्रेश ॥ ०० ॥ सुउ व भु सुउ ल वि भउ नां भ च डि विउ
 उउ न त्र मि र भा ॥ कुल्ल र भु ग उ र भु ल ठं ला ठ वे म्भा
 नि नि म क र स धः ॥ ०० ॥ न र म्भि र ठ यं ठ न रा मं नि र
 भे व क ल दं नि र ल य ॥ ग द्दु लं कि र भ नः भ भ दि ये

मङ्गल
 १

दुःखमेवमिनिवमनिभित्तु ॥ ०१ ॥ मधुहोमभु ॥
 तेभोलोवक्तुतेर्येषु पितृणं दत्तुं न भालयेव क
 लिभुग ॥ रक्तुदिगमदिनां मेककं न शीघ्रमेक
 वहीयसीद ॥ ० ॥ कपालमो गजल हीति मगुगाम
 नेक विगधीकृकथा ॥ ममेव रणं रक्तुणं रं हं कं
 पुरलेव गलीभुते ॥ १ ॥ भं रं मं रं विग मं म
 देव रं गे र प प्रभा मभा ॥ वरुनीवी विविपं विम
 धादुष्टी उत्रले भडले रं ॥ ३ ॥ भकधुमे मं ट
 केरुदभु मीभुह भुह मये विधामभा ॥ मउधमं ।

४६

CC-0 Sharada Manuscripts at UPSS Lucknow, Digitized by eGangotri

[illegible]

भं०॥ कलरुभोष्टिचरुणविण्डकलानि० भुव० ल०।
 उ० भु०॥ २॥ भु० लु० न० दुरकलरुभी० उ० भु० प० नि०
 पा० दुरव० नी० पा०॥ क० प० न० द० सु० य० म० सु० भ० र० र० न० क०
 प० उ० द० मि० भु० उ०॥ १॥ वि० प० क० प० क० भु० य० य० भ० म० वा० म० नि०
 क० वि० प० वि० क० य० म०॥ म० गी० र० पी० क० म० रा० क० सु० भ० र० म० र० भु०
 उ० भे० ए० न० य० इ० व० सु० भ०॥ ५॥ सु० वि० सु० व० वि० विल० भं० भ० न० ल० क०
 ए० ना० क० ए० न० य० वि० य० न० भे० प० भ० वि० लि० क० द० भ० न० भ०॥ भ० वि०
 मि० न० भ० व० वि० उ० द० क० व० सु० उ० भ० य० न० भ० य० न० भं० भु० मी० उ० क०
 न० भु० उ०॥ ७॥ वै० वि० म० उ० सु० ल० न० क० मि० प० ल० मी० प० उ० द० के

CC-0 Sharada Manuscripts at UPSS Lucknow, Digitized by eGangotri

मेदिनमसूत्रप्रदेशः भूतः ॥ ३ ॥ कभिनीउरयभो।
 एभमेउरे विवादनयगभमैराहैः ॥ ४ ॥ भावविनयेः
 भापठवीरेवेवममिवेभत्र ॥ ५ ॥ भूतः ॥ ६ ॥ भनभो
 एभिभतिप्रकमंभपाविभिरेवेतिभंयुगानि ॥ भवि
 इविष्टहभननानिऊदाइरभितुस्त्रिइमापदि ॥ ७ ॥
 १ ॥ वलकयसूत्राधिविधकवकुः भाचंविरोवेकण
 भकीयेः ॥ वृष्टिरेमिजाप्रवृत्तं ॥ ८ ॥ मंजीधरिङ्ग
 धलवेमभः ॥ ९ ॥ वल्लिखिणचरयदगभः भूतः
 चैतेभमभूतयभूतवागभा ॥ भूविजभोष्टचपडेः

९६
 लं.

CC-0 Sharada Manuscripts at UPSS Lucknow, Digitized by eGangotri

सु. ६.

नीमयदद्युठवेदुपधिरपिलविमरुभा॥भा॥
 वादययानिठनवेपादुभाजभा॥भा॥
 १॥मल्लगेष्टकभिसीभ्रमिभ्रात्रुविउंमंरैधमो
 धेःप्रवाभः॥मवृकंभृष्टुगीरैरगंरुयुठवेच
 म्वमिमवः॥३॥पुगेष्टपिःनमकमठिकदिः
 वदिःमभुविभ्रागामेवदिःभ्राग॥प्रामिश्र
 पिभ्रुधलविः४॥भृपैमंरैधमभृ॥७॥भृभि
 ठुरपिगोरवलविःमभृपककपरिकययुक्तः
 कदभिदिगपिमिभ्रुनकलिरदठलिमभृवृ

३७
 ल
 ०९

प्रल॥०॥ नीरलभं मरलभद्रुवै विप्रिचिद्रयत्र
 यविपेरपिलाठः॥ वैठवैत्रिरीव विलाभैलाठवै
 म्रनिद्रुगदमिभंभुः॥००॥ भाप्रभद्रविठवकयभ
 द्वैः श्रीयवजकलदं किलयति॥ भालयाप्रमलनंठ
 लदतिद्रुववैरिभमिवैत्रिभमभु॥०१॥ **पुष्यमवैः॥**
 पेशयउवाउकठप्रकेपः मिरोभिले भउत्रपीरुंम
 भकीयभिद्रुलदंरगं भद्रभिभुद्रुमिभुद्रिवरी
 ०॥ **वक्राफपीरु** प्रठवैत्रगं प्रउवृयेकुभिपउठयं
 म॥ मित्राप्रुद्रुगभचीभउद्रुमिभुद्रुवउवउभ

[illegible]

इभयेयमिभूता ॥५॥ भिरकषु भुपिप्रसूदीनगभूतद
 निपनगामनंमिमेता ॥ मइहीतिभुपिनीतिविमृतेभीन
 केतुतैतननिकेतनमनो ॥७॥ मनेकएवपिभंभुमः
 भ्रातृयाभुगनाभुपिवित्तमः ॥ सुतुंयवकुचभनो
 पलविः कभयभसुहृमणभमंभुः ॥३॥ पनविता
 मनेरेभठयात्रितंभुतुदितप्रमदयगिपीरुनभा ॥ भति
 विपदयगंरुतयभेनवभणभमभागभुभागतः ॥७
 यहीठुहीतिरुमृतिभुद्वेवपारेवकुताभूतदविः
 रुत्तमैतंसयतेभानवनाभानेठनेरुतेवतभाने ॥०॥

ये धाते धं मानव धादि मे धात् स धाति भुतिः कीति रभ
 म् ॥ सो दं वी दं म पि ऐ दं भू दं दू गो धा भुः भ भु म्
 धि भ भुतः ॥ ०० ॥ विले म न र्ने रु प मे ध पी रु म् रु रु व
 मि रु नै चि वा म् ॥ ही ति रु पा रु द् रु ति ति ता तुं द्या ल
 ये मे त्र लि नी म रा म् ॥ ०१ ॥ **म व य वा रु रु उ वा**
कं उ रु ल म् ॥ छि म् रु पी रु रु य उ वा उ ला रु वि ता प ति
 चै रु व वै प री रु म् ॥ वा म् रु छि रु भि नी भ रु मि रु भिं रु
 भ रु व रु रु भू रु मं भू ॥ ०॥ व म् न ले म न पी रु न कं उ व
 क व भ पि रु रु रु ति रु नी म रु ॥ रु वि ल ला रु भ रु रु च

म ६
 तं
 ०१

CC-0 Sharada Manuscripts at UPSS Lucknow, Digitized by eGangotri

इधरुः सिंदिकया; ॥ ५ ॥ अत्र दूतं यान भद्रादिकं वृं क
 तामिदं मादुलामिदुयति; ॥ कं वं भुवाउ भं सउरं प
 भद्रं सुदुभिनी भन भं भुः ॥ १ ॥ सया लै मादुववा
 विद्विधः भद्रं दृष्टा पि भ्राद्वि डि सु प्र वाम; ॥ क डि दी भं
 भाव वा नां दि व रु मिं दी भ व वै य न भु न व गी ॥ ३ ॥ पीउ
 नं दि व भु यै पि म रे वै यै धं य भ द रु म द वि म धः ॥ ५ ॥
 क द्वा मि च न भ न व द्वि व द्वा न भ म भ व डि उ भ सु र ॥ ७ ॥
 सु व नि ना य क उ ह य भ रु उं नि ॥ ८ ॥ नै भ द मै व नि पी रु
 न भा ॥ ए न वि ना म न भ मि म उ रु मं य डि उ भे म म भे म य

१६
 लं
 ०२

किं लक्षणम् ॥ ११ ॥

वि
रि

मे	क	मि	क	मि	कं	उं	कं	पं	मे	कं	भी
भु	मु	म	मु	ल	मं	व	हे	म	हे	ली	सं
ल	मं	व	हे	भु	मु	म	मु	म	हे	ल	कं

वि
रि

मउदिनश्वेमेलयेभ्रदाम्यः ॥ निमश्वेमेलयेभ्रवाम्यः
 इरमिथः ५३ ॥ ॥ मेमवलपुत्र ॥ ॥ भयामभव
 भातंमगउवद्यगलंरिण ॥ वारगेपीपलानि ॥ रुम
 लभेयेष्ट ॥ यमकवाक्क एकदिदिठगामणिक
 भागउउमभसुभंगुष्टमउठिठगंमद्वयममेलव

व
६
०५

ऊवाक्येष्वामुक्तिरुगनीयं अतिक्रम्युक्तिकयमिति, उदध
० धुमं गृह मयकम्

उक्तिक'भुवमंयेष्ट ॥ अतिक'भुवमं गामृमति
कभागउंउमधि। धुमं गृह'मव'इकु'मव'मयक
भुवमंयेष्ट, यद्य' सकमयं' यद्य'गउं' उद्य'पामृम'म'कु'॥
द्विमेवे' दिम'उंभा' दिमेवे' मरवेम'म'ग'सउं' एम'कल
ये' यम'कु'कु'मि'न'विग'ग'वि' उवि'मि'ग'वि'इ'कु'यः॥
परः'मि'व'म'ठ'व'उ'उ'मि'न'भु' वाम'भू'क'नी'ठ'व'उ' ॥ उ'वि
व'कु'लयं' ॥ ॥ मय'व'कु'म'रि'ल'भा'द ॥ वि'ए'म'ल'य'प'उ'वि
उ'म'ल'य'प'म'कु'प'वि'प'उ'द'वि'र'मि'पः॥ भु'द'र'मि'प'उ'वि
र'कि'म'कु'ठ'पी'म'र'वि'मि'वि'म'प'प'म'क'भा'॥ यद्य'॥

उमदधुतेल्लयः॥ चषदधुतीयदधुऊं॥ रिठंरिठमि
 रि॥ लयुठंतेल्लयगमभकमात्रिठंरामिदुयं॥ ३॥ उम
 मभीरदात्तं चत्तं पंगदत्तं दधुऊं नवति॥ यषाले १३ श्री
 ग्रहितीयदधुतीयगमिधुवतुभाः॥ श्रीरदः॥ दधुतेल्ले
 यः॥ उताभिधुगमिधुवतुभाः॥ पंगदः॥ दधुतेल्लेपः॥
 १३ श्री तवभवत्त॥ यमूवयसुमनयेनादः॥ रविठंभगुरवः॥ रि
 प्रधुवागदः॥ चषयत्तं दधुऊं नम॥ रदिउति॥ उतां
 भीधुधुगदत्तं रदिमिधुधुदधुपाभा॥ यषागदो
 वधुदेमेभीरदात्तं दधुपाभा॥ मिवावधुदेमे॥

२५५
 ०५००

१३ श्री

१३, १३, १३

॥ मेधादिगल्लयेद्रं गडं रं भिमसुभ ॥ रवि
 विषुदोदं मेधं मेधादिभजुद ॥ ॥

पुंगदाचंदयपमदुभा ॥ मधुमदुःभुनेधुमिउगदवलि
 नेठवति ॥ पादुभभुने ॥ ऐदुभा ॥ मरुःअधियषा ॥

उ	मं	हे	व	ल	सु	म	गदः	पादुल्लेदीनवीदःभुम
							भुनरं	पिहभपुउमुउ ॥ मम
							महेवले	मिहवलेरेऊःपादुव
							भुभेवले	मीवलेदिमभा ॥ ५ति
							गतिदिगल्ले	दीनरलभपुवलेउल
							ऐदु	वलेविलयः ॥ ॥ ॥

मधुभजुविलयः ॥ ॥ ऐमंभुउवदुभमिउं पउदुल्लेधु
 मेधादुभभउठवे ॥ मंमुडिलयादुदुदं भिउं भुउदु

॥ वधलयं नल्लयं गडं रं भिमसुभ ॥ रवि विषुदोदं मेधं मेधा
 लयादिभजुद ॥ ॥

व.
६.
१

मगच्छेतावनेमयोमेः ॥ मंभूधुवद्वभूमिडिधवेमवद्व
 भदिउंगडाकं ॥ मंभूडिलयायादि ॥ एद्वलयडा ॥
 गगचभेकभदिउंभूधुवद्वमठिठगंमद्वमधं कं ॥
 मलयमंभूमिनामंठवडि ॥ मरमिः ॥ वद्वलयभू
 न ॥ यद्वठवडि ॥ उद्वभू ॥ उद्वमिधः भूडिपिडिडि ॥
 ठगमलाठभद्वलेमकेमंमद्वद्वलयभेवद्वगिनः ॥
 करेडिभंमंविपलंभूगधं ॥ भूडिपिभूडिडिवनंम ॥
 मभाभिनाउद्वद्वमंमुठेवलेपपत्रेयउद्विडेव ॥
 यदीडिडभचभनेवभूडिपिपलाद्वमंमंमंमं

कथमत्राति
गलनीयः

मे	व	भि	कं	भिं	कं	उं	वं	यं	भं	ऊं	भी
०	१	३	५	७	९	१	३	५	७	९	००

मृभा ॥ ॥ मयभाजकमे... गद'अवह'दया ॥ ॥ एमरु
भाष्टाभदिउंगडावैद्विदीविगनरुहउसुमेधभा ॥ ॥ एमेय
भा ॥ मनेट्टादिगलनयाभहंउ'वडा ॥ गलनीयभहंग
डाहंभदिउंगवठिह'गंमह ॥ यडा ॥ मेधं ॥ भादम ॥

	उ	सं	हो	र	ली	म	व	के	उ	
भंरु'तिः	महं
धमरु'तिः	.	०	.	०	०	०	०	०	१	भा'भाः
गलनीयः	०३	००	१०	१२	०३	११	१०	१०	०	दिन'नि
॥ ॥ वहं										मवं
॥ भंरु'तिः										
॥ मकउ'रु'दि										

रुनिगाउं तिपु'ति ॥

वहं
०३